04TH SUNDAY ORDINARY – C (03-02-2019)

Jeremiah 1:4-5, 17-19; Psalm 71:1-6,15,17 1 Corinthians 12:31-13:13; Luke 4:21-30

आज के पाठ का मुख्य विषय है– हमें **ख्रिस्तीय विश्वास के प्रति दृढ़ता से खड़े होकर**, अपने **समाज तथा समुदाय में, द्वेष तथा तिरस्कार को, डट कर सामना करना** है।

जब ईश्वर ने येरेमियस को नबी बनने के लिए बुलाया, ईश्वर ने उसे, विरोध तथा तिरस्कार का सामना करने के लिए, मानसिक रुप से सुदृढ़ बनाकर सुसज्जित किया। नबी येरेमियस को, राजा तथा लोगों ने घोर विरोध किया, वह नबी, आने वाले मुक्तिदाता अर्थात् प्रभु येसु खीस्त का आदिरुप बन गया। नबी येरेमियस ने संकट तथा विरोध के समय में, इस प्रकार प्रभु का साथ दिया कि, वह सभी नबियों में सर्वश्रेष्ठ बन गया।

दूसरे पाठ में संत पौलुस, कुरिंथियों को, उनके स्वार्थभरे दृष्टिकोण को सुधारने के लिए पत्र लिखते हैं। उनको यह उपदेश देते हैं कि, पवित्रात्मा के वरदानों से भरे लोगों को, एक–दूसरे के प्रति ईर्ष्या, प्रतियोगिता तथा विभाजन से दूर रहना चाहिए। जब विश्वासियों ने किसी अन्य विश्वासी को पवित्रात्मा के वरदान से संपन्न होते देखा तो, कुछ लोग ईर्ष्या से जलने लगे, अन्य लोग, जिन्होंने भी पवित्रात्मा का वरदान पाया था, उन्होंने एक–दूसरे के साथ प्रतियोगिता तथा तुलना करना प्रारंभ किया। किसी अन्य लोगों ने विभाजन का बीज बोने के लिए इन वरदानों का गलत प्रयोग करने लगे। संत पौलुस, ऐसे कठिन परिस्थिति तथा ऐसे कठिन समुदाय को, प्रेम का महत्व सिखाने के लिए; प्रेम का गुणगान करते हुए, पत्र लिखकर समझाते हैं।

आज का सुसमाचार, पिछले रविवार के सुसमाचार के आगे के भाग का वर्णन करता है। प्रभु येसु ने नाज़रेथ के सभाग्रह में, नबी इसायस के ग्रंथ से पढ़कर, स्वयं को प्रतीक्षीत मसीह तथा उद्धारकर्त्ता के रुप में घोषित किया। लोगों ने प्रभु येसु को संशयात्मक दृष्टिकोण से देखा, कुछ लोगों ने प्रभु की आलोचना की। प्रभु येसु ने तिरस्कार को, दृढ़ता से तथा धैर्य के साथ सामना किया। नबी येरेमियस, संत पौलुस तथा प्रभु येसु ने, ईश्वर द्वारा नियुक्त होकर, लोगों को, ईश्वर का संदेश धैर्य के साथ घोषित किया। लोगों के घनघोर विरोध के बावजूद, इन तीनों के पास, यह दृढ़ भरोसा था कि, ईश्वर उनके साथ है और वही उनका मार्गदर्शक है। इन्होंने अपने प्रयास को जारी रखा, जैसा कि नबी येरेमियस ने जीवन के अन्त तक संघर्ष किया, पौलुस ने शिर–विच्छेद होने तक संघर्ष किया और प्रभु येसु ने क्रूस मरण तक!

क्रूस की प्राणपीड़ा हो या लोगों के ताने, किसी भी कठिन परिस्थिति ने भी, प्रभु येसु को, अपने मार्ग से विचलित नहीं होने दिया। संत पौलुस ने जो प्रेम का वर्णन किया है, उस प्रेम की पराकष्टा प्रभु येसु स्वयं है, जिन्होंने अपना सर्वस्व मनुष्यों के उद्धार के लिए अर्पित कर दिया।

संत पौलुस, कुरिंथियों को कहते हैं कि, प्रेम ही सच्चा मार्ग है। प्रेम के अभाव में, किसी भी वरदान, लोगों के ऊपर बेअसर कर देता है। जैसे कि, यदि मैं नवीन भाषाएँ बोलूँ, अधिक से अधिक धर्मग्रंथ का ज्ञान हासिल करुँ, प्रकृति के ऊपर अपना अधिकार दिखाकर पहाड़ों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाऊँ, यहाँ तक कि अपने शरीर को भस्म होने तक त्याग तपस्या करुँ, यदि ये सब करते समय मेरे हृदय में प्रेम का अभाव है, तो मैं कुछ नहीं के बराबर हूँ।

अन्त में **सन्त पौलुस** प्रेम का गुणगान उत्कृष्ठ भाषा के प्रयोग से करके, **प्रेम को सबसे महान ठहराते हैं।** विश्वास, भरोसा और प्रेम अब बने हुए हैं लेकिन केवल प्रेम ही अजर अमर है। प्रेम कभी नष्ट नहीं होता जैसे कि, स्वर्गराज्य में ईश्वर का सीधे–सीधे दर्शन करने से, विश्वास और भरोसा दोनों समाप्त होते हैं लेकिन प्रेम सदा बना रहता है। प्रेम ही केवल सर्वोच्च श्रेणी का गुण है, जो कभी अन्त नहीं हो सकता। धर्मग्रंथ यहाँ तक कहता है कि, **"हम एक–दूसरे को प्यार करें, क्योंकि प्रेम ईश्वर से उत्पन्न होता है, जो प्यार करता है, वह ईश्वर की संतान है और ईश्वर को जानता है"** (1 योहन 4:7–8)।

पवित्रात्मा के वरदानों के अनेक अभिव्यक्ति, कोरिन्थ के, समुद्रीतट में निवास करने वाले ख्रिस्तीय, अनुभव करते हैं। ईश्वर, हम मनुष्यों को, अलग–अलग प्रकार के वरदानों से विभूषित करता है। पवित्रात्मा के वरदान, ख्रिस्तीय समुदाय को संघटित तथा मज़बूत बनाने के लिए, विश्वास में दृढ़ बनाने के उद्देश्य से ही, ईश्वर अपने लोगों को देता है।

संत पौलुस, ऐसे समुदाय को संबोधित करके लिखते हैं; जो कि, स्वार्थपरता के कारण, पवित्रात्मा के वरदानों का गलत प्रयोग करना प्रारंभ करते हैं और अपने पैर पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हैं। वे एक–दूसरे के अंदर ईश्वर की उपस्थिति नहीं देख पाते हैं और एक–दूसरे के साथ पवित्रात्मा के वरदानों की प्रतियोगिता करना प्रारंभ करते हैं। वे तुलनात्मक दृष्टिकोण से एक–दूसरे के वरदानों का न्याय करते हैं।

इसलिए संत पौलुस, कुरिंथियों को कहते हैं कि वे, पवित्रात्मा के वरदानों के कारण, एकजुट हो जायें तथा कलीसिया के एकता के लिए काम करते रहें। वे दीनतापूर्वक कलीसिया के ऊँचे अधिकारियों की बातें मानें और आज्ञाकारी बनें, प्रतिद्वंद्विता से बचते रहें। वे ऐसे प्रयास करें कि; वे एक–दूसरे की सहायता कर सकें, न कि एक–दूसरे से ईर्ष्या।

संत पौलुस यह चेतावनी देते हैं कि, यदि प्रेम के अभाव में, पवित्रात्मा के वरदानों को उपयोग किया जाता है तो; भविष्यवाणी का वरदान, सभी रहस्य जानने का वरदान, समस्त ज्ञान का वरदान, विश्वास का वरदान, ये सब व्यर्थ ही

Scanned by CamScanner

व्यर्थ है। **केवल एक ही मार्ग सच्चा है, ठिकाऊ है और शाश्वत है, वह है प्रेम का मार्ग!** सभी गुणों में, सबसे महान गुण है– प्रेम। **"अभी तो विश्वास, भरोसा और प्रेम – ये तीनों बने हुए हैं। किन्तु उन में प्रेम ही सब से महान् है"** (1 कुरिंथियों 13:13)।

आज का भजन स्तोत्र (71), में भजनकार, विरोधियों का समाना करते समय, अपने अनुभव को अभिव्यक्त करता है। भजनकार, ईश्वर के संरक्षण पर गहरा भरोसा करता है। वह, ईश्वर के सच्चे मार्ग को, लोगों के बीच में रहकर, उनके नकारात्मक प्रतिक्रिया के बावजूद भी प्रचार–प्रसार करने का साहस प्रदान दिखात है। भजनकार के साहस तथा धैर्य का मूलस्रोत, ईश्वर स्वयं है और ईश्वर पर उनका अटल भरोसा। **"माता के गर्भ से मुझे तेरा सहारा मिला है। मैं प्रतिदिन तेरे न्याया और तेरी सहायाता का बखान करुँगा। हे प्रभु! मुझे बचपन से ही तेरी शिक्षा मिली है। मैं अब तक तेरे महान् कार्य घोषित करता रहा हूँ** (स्तोत्र 71:6,15,17)।"

नाज़रेथ के सभागृह में प्रभु येसु, नबी इसायस के ग्रंथ में, मुक्तिदाता के विषय में, की गई भविष्यवाणी के वक्तव्य को पढ़ने के पश्चात् यह दावा करते हैं कि लोगों के सुनने में, धर्मग्रंथ का यह कथन पूरा हो गया है। लोग; प्रभु येसु के मुख से निकलवाले सुंदर तथा मनोहर शब्दों को सुनकर अचम्भे में पड़ गये। लोगों ने प्रभु येसु की यह कहते हुए उपेक्षा की; कि, "क्या यह युसूफ का बेटा नहीं है?" लोगों ने प्रभु की उपेक्षा इसलिए की, कि वे उनको बचपन से ही जानते थे तथा उनके परिवार जनों से भी वे परिचित थे। लोगों ने न केवल नाजरेथ के सभाग्रह में प्रभु येसु का विरोध किया बल्कि, अनेकानेक संदर्भों में उनका विरोध किया। ईश्वर को अपना पिता कहने पर प्रभु येसु का विरोध किया, विश्राम के दिन लोगों के जान बचाने का कार्य करने पर उनका विरोध किया, पापियों के साथ भोजन करके उन्हें सन्मार्ग पर लाने का विरोध किया। लेकिन प्रभु येसु ने इन सारी बाधाओं को डटकर सामना किया और पिता द्वारा दिया गया मिशन कार्य संपन्न किया।

प्रभु येसु, पुराने व्यवस्थान के दो उदाहरण देकर, यहूदियों को समझाते हैं कि, ईश्वर ने अपने महान कार्यों को गैर–यहूदियों के बीच करके यह स्पष्ट किया कि, गैर–यहूदि, चुनी हुई प्रजा से भी अधिक विश्वसनीय है। सरेप्ता के विधवा के घर में, महान नबी एलिया ने शरण लिया और उसके लिए नबी ने, महान चिह्न चमत्कार किये। साढ़े तीन वर्ष सूखा पड़ने पर भी, उसे भूख–प्यास से बचने के लिए आशीर्वाद दिया। नबी एलीया का शिष्य एलीसेयुस भी केवल एक कोढ़ी को चंगा करते हैं, वह था सिरिया देशा का सेनापति नामान्। वह परदेशी रहने पर भी नबी ने उसे कोढ़ से मुक्त करके सच्चे ईश्वर का ज्ञान दिया। लेकिन इस्राएल के किसी कोढ़ी को भी नबी ने चंगा नहीं किया क्योंकि उनका विश्वास कमजोर था। कानानी स्त्री जो कि, एक परदेसी स्त्री थी, जिसको भी विश्वास के कारण उसकी बेटी को शैतान से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

जीवन संदेश––

1) हमें धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ, सभी प्रकार का विरोध का डटकर सामना करना चाहिए। ईश्वर के राज्य को नष्ट करने के लिए दुष्टात्माएँ दो प्रकार से काम करती हैं। **पहला**— वे लोगों को, प्रभु येसु के निकट आने से रोकती हैं। **दूसरा**— यदि किसी ने प्रभु येसु को पहचान कर, प्रभु येसु की ज्योति को ग्रहण किया, तो वे उन्हें, सच्चे ईश्वर की, सच्चे हृदय से सेवा करने से रोकती हैं। इसलिए याद रखें कि, हमारा संघर्ष हाड़–माँस से लैस मनुष्य से नहीं बल्कि अन्धकार में भटकती हुई उन दुष्टात्माओं से है, जिनके खिलाफ प्रभु येसु ने चालीस दिन के उपवास के समय समाना किया था।

शैतान, मनुष्य के अन्दर घुस कर अपना काम पूरा करने का प्रयास करता है। उसने पेत्रुस के अन्दर प्रवेश करके, प्रभु येसु को क्रूस के रास्ते से चलकर मनुष्य की मुक्ति करने से रोकने का प्रयास किया था (मत्ती 16:23)।

2) दूसरों से मदद प्राप्त करने के लिए स्वयं के घमंड तथा पूर्वाभास को त्यागने की आवश्यकता है। हमने अपने को सहायता करने वाले शिक्षकों, पुरोहितों, माता–पिता, भाई बहन या मित्रों को, अपने घमंड से तथा नफरत की भावना से चोट पहुँचाई है। हम दीनहीन बनकर, हमारी सहायता करने वाले लोगों का उत्साह वर्धन करें, उनके अच्छे कर्मों के लिए उनको प्रोत्साहन देकर धन्यवाद के दो शब्द अवश्य कहें।

3) समाज तथा देश में विरोध के बावजूद, हमें प्रभु येसु का अनुकरण करके उन्हें अपने जीवन में साक्ष्य देना है। लोग हमारे शरीर को नाश कर सकते हैं लेकिन ईश्वर सभी लोगों से बलिष्ट है, वह हमें अपने पापों के लिए तथा विश्वासहीनता के लिए हमारा शरीर तथा आत्मा को भी नरक के आग में नष्ट करने में सक्षम है **(मत्ती 10:28)।** हमें, समय–असमय पर प्रभु येसु को साक्ष्य देना है।

.....

Scanned by CamScanner